



५३१०

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण EXTRAORDINARY.

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 713]

नई दिल्ली, सोमवार, अक्टूबर 30, 1989/कात्कि 8, 1911

No. 713] NEW DELHI, MONDAY, OCTOBER 30, 1989/KARTIKA 8, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ बहुत दी जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging Is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

वित्त मंत्रालय

(आधिक कार्य विभाग)

(बैंकिंग प्रभाग)

नई दिल्ली, 30 अक्टूबर 1989

आधिकारिक

का. आ 878(अ) —केन्द्रीय मरकार, बैंकिंग विभाग द्वारा दिए गए विविध नियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 को उपधारा (7) के अनुसार में यून इंडेपेंडेंट बैंक निय., कनफर्म के उन्होंने बैंक के नथ समंज्ञन की स्कोर के संबंध में, जो उक्त उपधारा के अधीन केन्द्रीय मरकार द्वारा मंजूर की गयी है 31 अक्टूबर, 1989 को विहित न रोक के रूप में विनियिट कर्मी है।

[मंद्र. 17/2/89-वी. ओ. -III(i)]

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Economic Affairs)

(Banking Division)

NOTIFICATIONS

New Delhi, the 30th October, 1989

S.O. 878(E).—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the 31st October, 1989 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the United Industrial Bank Limited, Calcutta with Allahabad Bank, which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section.

[No. 17/2/89 B.O. III(i)]

का. आ. 879(अ) —केन्द्रीय मरकार ने बैंकिंग विभाग द्वारा दिए गए अवैदन पर, उक्त धारा (1) के अधीन मार्तिय दिजिंग बैंक द्वारा किए गए अवैदन पर, उक्त धारा (2) के अधीन यून इंडेपेंडेंट बैंक नियमिटेड, कनफर्म के संबंध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के अधीन अधिकारिक घोषित किया है;

और भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इवाहाकाद स्कीम के माध्यम सुनाइटेड हंडस्ट्रियल बैंक लिमिटेड, कलशरता के समामेलन की स्कीम तैयार की है।

और रिजर्व बैंक ने उक्त धारा को उपधारा (6) के उपबन्धों के अनुसार उक्त स्कीम का प्रारूप संबंधित बैंकों को भेजने के पश्चात और उक्त स्कीम की वाजत प्राप्त सुमात्राएँ और आक्षेयों पर विचार करने के पश्चात वह स्कीम उन्नतिगत की है और उसे मंजूरी के लिए केन्द्रीय सरकार को भेजा है।

अब अतः केन्द्रीय सरकार ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इसमें ग्रंथि विधि निवंधनों और शक्तों के अधीन रखते हुए इस स्कीम को मंजूरी दे दी है।

(1) सुनाइटेड हंडस्ट्रियल बैंक लिमिटेड, कलशरता अन्तर्रक बैंक होता और इवाहाकाद बैंक अंतर्रिती बैंक होगा।

(2) ऐसी तारीख से जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम, की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन इस प्रयोगन के लिए विनियित करें (जिसे इसके पश्चात् विहित तारीख कहा गया है) अन्तर्रक बैंक के सभी अधिकार, प्रक्रियाएँ, वाक्ता, हित, प्राधिकार, विशेषाधिकार, सामग्री, अस्तियाँ और जागम और स्थवर सम्पत्ति जिसे अन्तर्रक भूमिका के सभी आपातनों या पृष्ठों या कर्त्ता द्वारा प्रारक्षित और उनमें प्रस्तुति। भाटकों और अस्त्र धनर यित्रों और प्रसंगविदाओं के अधीन परिसर यित्रों के अधीन वे धारित हैं, सभी कार्यालय, फर्मीचर, विधिवित उपस्कर, संघर्ष, यंत्र और संधिकार, बही, कागजन्यत लेखन सामग्री स्टॉक, अस्त्र स्टॉक और सामान, अस्त्र स्टॉक विनिधान शेदर और प्रभूतियाँ, हाथ में और अभिवहन में प्राप्त सभी दुहियों सभी हाथ की ओर लेखा की रोकड़ या बैंकों के पास नियेष लेखा (जिसके अन्तर्गत भाग पर या संधिया सूचना पर धन भी है) बुलियन, सभी बड़ी ज्ञान, बंधक, ज्ञान और प्रतिभूतियों के फायदे सहित अन्य ज्ञान या उसकी कोई प्रत्याभूति अंतर्रक बैंक के कारबाहर के संबंध में सभी अस्त्र, यदि कोई हो, सम्पत्ति अधिकार और सभी प्रत्याभूतियों के अस्ति संबंधी फायदे, इस स्कीम के अस्त्र उपबन्धों के अधीन रहते हुए अंतर्रिती बैंक को प्रस्तुति हो जाएंगे और उसकी सम्पत्ति और अस्तियाँ बन जाएंगे और विहित तारीख से ही अन्तर्रक बैंक के सभी दायित्व करन्त्य और फायदे इसमें इसके पश्चात उपबन्धित विस्तार तक और रीति में अन्तर्रिती बैंक के दायित्व करन्त्य और वाद्यताएँ होंगे और बन जायेंगे।

पूर्वगमी उपबन्धों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव ढासे जिन्हा सभी संविदाएँ विलेख, बंधक, करार, मुकुलारनमें, विधि प्रतिनिधित्व की मंजूरियों और किसी भी प्रकृति की अन्य लिखतें जो विहित तारीख के ठीक पहले प्रस्तिवशील या प्रमाणशील हों, अंतर्रिती बैंक के विरुद्ध या उसके पश्चात् इसमें उपबन्धित विस्तार तक और रीति में प्रस्तावशील होंगी और जैसे ही कार्यान्वित की जा सकेंगी मात्रों अन्तर्रक बैंक के स्पान पर अन्तर्रिती बैंक उसमें पक्षकार रहा हो, मात्रों वे अंतर्रिती बैंक के पश्च में जारी की जायी होंगी।

यदि विहित तारीख को अन्तर्रक बैंक द्वारा या उसके विशेष कोई बाद, अपील या किसी भी प्रदूति की कोई अस्त्र विधिक कार्यव हो लेता है तो उसका उपरामन नहीं होगा। वह बंद नहीं होगी या उस पर किसी भी रूप में प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के अन्य उपबन्धों के अधीन रहते हुए अंतर्रिती बैंक के द्वारा या उसके विरुद्ध जरो रखी जा सकेंगी और प्रवर्तित की जा सकेगी।

यदि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के अनुसार इस स्कीम के उपबन्ध उम देश में स्थित किसी ऐसी धारिता या दायित्व को जो अन्तर्रक बैंक के उपकरण के भाग है, अंतर्रिती बैंक को अन्तरित या उसमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते तो ऐसी धारिता या दायित्व के संबंध में अन्तर्रक बैंक को कार्यकूल प विहित तारीख से अंतर्रिती बैंक के उपबन्ध के मुश्य कार्यपालक अधिकारी में न्यून ही जाएगा और वह कार्यपालक अधिकारी ऐसी रमी शक्तियों का प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसे सभी कार्यव ही और वाले कर सकेगा, जो प्रभावी रूप से इसके कार्यपालप के परिमापन के प्रयोगन के लिए प्रत्यक्ष बैंक द्वारा प्रयुक्त की जा सकती जा रही जा सकती है। मुझे कार्यपालक अधिकारी जैसा अंतरण और निहित करने के प्रयोगन के लिए ऐसी सभी कार्यविधियों करेगा, जो भारत के अंदर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा अप्रेतित हों और उम नंबर में मुश्य कार्यपालक अधिकारी, या तो स्वयं या अपने द्वारा निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अन्तर्रक बैंक की आस्तियाँ वसूल कर सकेगा या उसके दायित्व का विहित करेगा और उसके शुद्ध अस्तियों का अंतर्रिती बैंक को अन्तरित कर देगा।

3. अन्तर्रक बैंक की बृद्धियाँ बंद की जाएंगी और उसकी तुलना की जाएगी और तुलनात्मक प्रथमतः 10 जून, 1989 को कारबोरार की सम दित पर तैयार किया जायेगा और तुलनात्मक च.डैड लेखाकार नथा चार्टर्ड लेखा करने की किसी गेसी कर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस प्रयोगन के लिए अनुमोदित या कामनिर्विवर की गयी हो सकती अपरीक्षित और प्रस्तुति कर दे जाएगे।

पूर्वगमी पैरा के उपबन्धों के अनुगार तैयार की गयी अन्तर्रक बैंक के तुलनात्मक को प्रत्येक प्रति अन्तर्रक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने वे पश्चात् यथासंभव गोष्ठी कम्पनी रजिस्ट्रार के पास काइल की जाएंगी और तन्मध्य चात अन्तर्रक बैंक से तुलनात्मक या लाभ और हि नि लेखा तैयार करने या उसे युवराजों के समझ प्रत्युत्तुन करने या उसकी प्रतियों कम्पनी रजिस्ट्रार के पास काइल करने की या तुलनात्मक और लेखों पर विचार करने के प्रयोगन के लिए या किसी अन्य प्रयोगन के लिए या कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपबन्धों के अनुवालन करने के लिए विधिक संधारण अधिवेशन बूलाने की अपेक्षा नहीं की जाएगी और नत्प्रवृत्त अन्तर्रक बैंक के लिवेक बौद्धं के लिए उस प्रधिनियम की धारा 245 की अपेक्षानुगार अधिवेशन करना आवश्यक नहीं होगा।

4. 1—अंतर्रिती बैंक, अन्तर्रक बैंक के परामर्श से निम्नलिखित उपबन्धों के अनुसार अन्तर्रक बैंक की सम्पत्तियों और अस्तियों का मूल्यांकन करेगा और दायित्वों की संगणना करेगा प्रथमतः—

(क) सरकारी प्रतिभूतियों से भिन्न विनिधानों का मूल्यांकन विविह तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को विद्यमान बाजार दरों पर किया जाएगा।

(ख) (i) सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोगन के लिए जारी की गयी धर्म धूमकेन में अधिकृतित सिद्धान्तों के अनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विद्यमान रूप में किया जायेगा।

(ii) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियों जैसे डॉकमेंट्स प्रमाण-पत्र द्वेजी बचत विक्रेप प्रमाण-पत्र और केन्द्रीय सरकार की लघु बचत योग्यता के अधीन जारी की गयी कोई प्रम्य प्रतिभूतियों या प्रमाण नहीं पत्रों की मूल्यांकन उनके अंकित मूल्य के आधार पर या उक्त तारीख को

तकद प्राप्त मूल्य के आधार पर, इन बींगों में से जो भी उच्चतर हो, किया जायेगा।

- (iii) जहाँ किसी सरकारी प्रतिभूति जैसे जर्मान री उन्मुक्तन, बंधन्वत या अन्य मामान प्रतिभूति जिसकी बाबत मूल्य किसी में देय है, का बजार मूल्य अनिवार्य नहीं किया जा सकता है या किसी काशणवश यह माना जाना है कि वह उसका उचित मूल्य प्रदर्शित नहीं करता है या वह अन्यथा उचित नहीं है, तो प्रतिभूति का मूल्यांकन उनीं रकम पर किया जायेगा जो सदृश्टि किए जाने वाले बकाया मूल और उसकी ब्यूज की किसी को उस कालावधि को जिनके दोगने ऐसी किसी है, सरकार द्वारा जारी की गयी किसी प्रतिभूति के मूल्य को जिससे प्रतिभूति का संबंध है और जिसकी वैरी ही या लगान वैसी ही परिपक्वता है या वह मुस़िगत वर्ती को छान में रखते हुए युक्तियुक्त माना जाना है।
- (ग) जहाँ किसी प्रतिभूति, योग्य, डिवेलर या अन्य विनियोग का बजार गृह्य उसके असमान्य बींगों से प्रभावित हो जाने के कारण युक्तियुक्त नहीं माना जाता है, वहाँ विनियोग का मूल्यांकन किसी युक्तियुक्त कालावधि के द्वारा उसके और उन बजार मूल्यक के आधार पर किया जायेगा।
- (घ) जहाँ किसी प्रतिभूति, योग्य या डिवेलर या अन्य विनियोग का बाजार मूल्य अनिवार्य नहीं किया जा सकता है, वहाँ जारी करने वाले सम्बन्धित की वित्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पांच बींगों के दोगन उसके द्वारा सदृश्टि ल.भाँ और अन्य मुस़िगत वर्ती को छान में रखते हुए, केवल ऐसे मूल्य को यदि कोई है, हिसाब में लिया जायेगा जो युक्तियुक्त मूल्य माना जायेगा।
- (ङ) दोनों की पुस्ट के लिए विभिन्न परिसरों और क्षेत्र सर्वे जू.स मन्त्रियों और किसी प्रतिनियों का मूल्यांकन उनके बजार मूल्य पर किये जायेगा।

(च) फर्मीवर और विकसवर, स्टाक की सेखन सामग्री और अन्य भासितयों, यदि कोई हो, का मूल्यांकन प्रति वर्षी अधिकारित भूत्य के आधार पर या अन्य योग्य मूल्य के आधार पर, जो भी युक्तियुक्त समझा जाए, किया जायेगा।

(छ) भ्रष्टियों, जिनके अन्तर्गत क्षय की गयी और मिर्किट पर घृगतान की गयी हृडियाँ भी हैं, अहीं वर्णी और विधि भासितयों की संविधान अंतर्गती बैंक द्वारा को जायगी और विधि प्रतिभूतियों जिनके अन्तर्गत उसके आधारक के रूप में धारित प्रतिभूतियों भी हैं, अन्तर्गती बैंक द्वारा परिक्षित और स्वत्यापित हो जाएगी। तत्पश्चात् अंग्रेज जिनके अन्तर्गत उनके भाग भी हैं जो श्रेणियों में वर्णित किए जाएं, अत्यांत “वे अग्रिम जिन्हें प्रछला और आसानी से अनुली योग्य माना गया है/ और “वे अग्रिम, जिन्हें आसानी से अनुली योग्य” माना नहीं गया है” और/गा जिनकी अनुली दृवंत या गकास्पद है।

(इ) इस स्कीम प्रयोजनों के लिए वापिसी के अन्तर्गत ऐसी समाधित वापिसी भी हैं जिनके लिए मन्त्रियों बैंक से विहित तारीख को या उसके पश्चात् अपने स्वयं के द्वारा में उचित रूप से पूर्ण होनी चाही जाएगा या आवेदा की जायेगी।

(ii) जहाँ किसी अस्तित्व का मूल्यांकन विहित तारीख को आधारित नहीं किया जा सकता है वहाँ वह भारतीय रिजर्व बैंक के अनुबोदन से भागत या पूर्णतः किसी परस्तावर्ती तारीख की वनूली योग्य भासित के रूप में जाना जायेगा। किसी भासित के मूल्यांकन और/या किसी अंग्रेज के वार्षिक और/या किसी दायित्व के अवधारण की वापिसी अंतरिक्ष बैंक और अन्तरक बैंक के बीच कोई सहमति है, रिजर्व बैंक को विवेचित किया जाएगा जिसका राय अंतिम होनी परंतु जब तक ऐसी राय प्राप्त महीं हो जाता तब तक अंतिम। बैंक द्वारा मद्दों या उस चाप का नूल्यांकन इस स्कीम के प्रयोजन के लिए अनन्त्रिम रूप से अपनाया जायेगा।

ऐसा करना आवश्यक होने की वजा में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी के बीच कोई धरवहमति है, तो “यह मामला भारतीय किसी भद्र के मूल्यांकन या दायित्व की ऐसी किसी भद्र के अवधारण के संबंध में समुचित समझे, और ऐसी राय अनिवार्य करने का व्यव अन्तरक बैंक की अस्तित्वों में से पूर्ण रूप से देय होगा।

पूर्वगामी उपबन्धों के अनुसार भासितयों का मूल्यांकन और वापिसी का अवधारण द्वारा बींगों और उसके मद्दों और लेनदेनों पर आबद्धकर होगा।

5. अन्तरक बैंक की संपत्ति और भासितयों के अंतरिक्ष बैंक को अन्तरण होने के प्रतिफल स्थृत अंतर्गती बैंक इसे और निम्नलिखित खण्डों में वर्णित विस्तार लेक अन्तरक बैंक के वापिसी का निवहन करेगा, अर्थात् :

(क) विहेन तारीख तक कर्मचारीदृढ़ प्रतिभूति निषेपों सहित उस पर प्रीदूत व्याज यदि कोई है, के सभ्य उस बैंक के पास अन्तरक बैंक के किसी कर्मचारी द्वारा जमा की गयी कोई धनराशि और विहित नारीब को सभी भूत्य बाह्य दायित्व, जिसके अन्तर्गत निषेप नहीं है, सदृश्टि किए जाएंगे या उनकी पूर्ण व्यवस्था की जाएगी।

स्पष्टीकरण— इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तारीख तक निषेप पर देय व्याज संबद्ध निषेप का भाग माना जायेगा।

(ख) प्रत्येक बचत बैंक खाते या बालू खाते या किसी अन्य निषेप की वापिसी क्रियनके अन्तर्गत सावधि निषेप, नकद प्रभाग-पत्र, मासिक निषेप, मांग या संक्षिप्त सूचना पर देय निषेप या अन्तरक बैंक के पास कोई अन्य निषेप जाहे वे किसी भी नाम से जाने जाते हों और कोई अन्य खाते जो खण्ड (क) के अन्तर्गत प्राप्त हैं जिसके अन्तर्गत इस स्कीम के अधीन देय समान तक व्याज दी है। अस्तित्वी बैंक विहित तारीख की संबंधित धारकों के नाम में एक समान और वैसा ही खाता : खोलेगा जिसमें विहित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए पैरा (५) में निर्दिष्ट तथा मूल्यांकित भासितयों में से प्रत्येक खाते के संबंध में उपलब्ध अनुपातिक योग्य मूल्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त भासितयों में से वे अग्रिम जो आसानी से बसूल योग्य नहीं माने गए हैं, या इवंत हैं या जिनकी अनुली शंकास्पद हैं, कोई अन्य आसितयों या भासित के भाग भी विहित तारीख द्वारा मूल्यांकित नहीं हैं और अन्य रूपम जो ऊपर खण्ड (क) में वर्णित संदर्भ या उपबन्धों के लिए अपेक्षित है, अपवर्जित किए जाएंगे और इसे प्रकार गूर्जांकित उक्त भासितयों में अन्तरक बैंक को जारी किए गए तारीख 10 जून, 1989

के अधिस्थगन आवेदन के पैरा १ के अप्पड (क) (1) के आधार पर किए गए संदर्भों की संतुलित रकम जोड़ेगा।

परन्तु 10 जून 1989 को कारोबार की समाप्ति को या उसके पश्चात् और विहित तारीख के पूर्व किसी निलेप खाते से किए गए किसी संदर्भ की संगता इस उप पैरा के अवीन जमा की जाने वाली रकम के मध्य की जाएंगी और तदनुसार जमा की जानेवाली रकम अनुपातिक ऐवर हाई जिसमें ऐसे संदर्भ की रकम कम कर दी जायेगी।

परन्तु यह और कि जहाँ अंतर्रिती बैंक को किसी विशेष खाते में की गयी प्रतिविटियों के सही होने के बारे में कोई युक्तिपूर्व संदेह है तो यह रिस्क बैंक के अनुमोदन में उपर खण्ड (ग) के आधार पर उस संदेह में किए जाने वाले अमा धनराशि को प्रतिपारित कर सकेगा। अब तक कि अंतर्रिती बैंक ऐसे खाते में सही अप्रिवेश अभिनिष्ठित नहीं कर लेता है।

स्पष्टांकन :

“अनुपातिक” पद में जहाँ तक वह इस पैरा में आता है ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अधिवेत है जो 10 जून 1989 को कारोबार की समाप्ति पर बकाया देगा है (विहित तारीख के ठीक पूर्ववर्ती तारीख तक देय व्याज सहित) और जहाँ तक वह इस स्थीम में अच्युत आता है, मैं ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अधिवेत है जो संदर्भ या विवरण के समय बकाया देय है।

(ग) ऊपर खण्ड (ख) में विनिष्टिट जमा धनराशि विषय जमा के पश्चात् अंतर्रिती बैंक संदर्भ कम से कम विलम्ब से किन्तु विहित तारीख में तीन मास तक निलेप बीमा और प्रत्यय गारंटी नियम अधिनियम, 1961 के अधीन स्थापित निलेप बीमा और प्रत्यय गारंटी नियम को (जिसमें इसके पश्चात् नियम कहा गया है) एक सूची देता, जिसमें सभी प्रकार ने उस अधिनियम की घारा 18 की उपधारा (1) की अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है, और तत्पश्चात् जब भी उस अधिनियम की घारा 18 की उपधारा (1) के अनुमान ऊपर खण्ड (ख) में निष्टिट रकम नियम से प्राप्त हो, अंतर्रिती बैंक उस तारीख या तारीखों से जिसकी रकम प्राप्त होती है, सात दिन के अन्दर उस खाते में देय धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम की घारा 18 की उपधारा (1) के अनुमान ऊपर खण्ड (ख) में निष्टिट प्रत्येक खातों में जमा करेगा। परन्तु:-

(i) यदि खण्ड (ख) में निष्टिट कोई खाता बन्द कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर जब उस खाते में जमा के लिए रकम नियम से प्राप्त होती है, परिपक्ष हो गया है तो उक्त रकम के हफकार व्यक्ति को संदेह अंतर्रिती बैंक हारा नकद रूप से किया जायेगा।

(ii) यदि खण्ड (ख) में निष्टिट किसी रकम के हफकार व्यक्ति को पता नहीं लगता जा सकता है या उसका असामों से पता नहीं चल पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देय रकम के लिए उपरन्ध स्वयं नियम की बहियों में किया जाएगा और उसका पृष्ठक रूप से लेखा दिया जाएगा तथा अंतर्रिती बैंक जो किसी रकम का संदर्भ करना नियम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हफकार व्यक्ति भिल नहीं जाता है या उसका पता नहीं मिल जाता है और नियम के अंतर्रिती बैंक के माध्यम से उस व्यक्ति की वाचत संदर्भ करने का विनिश्चय नहीं कर लिया है।

(घ) विलिप्त तारीख को अंतरिती बैंक की समावल घूमी रकम और आवश्यकी को दूर्बंध और गंभीरात्र छूट के लिए उपरन्ध के रूप में माता जाएगा और ऐसे बैंक की अध्य अभिनियमों में अवक्षण और अन्तरक बैंक के मध्यमों के अधिकार अंतर्रिती बैंक में पैसे होते जी नीचे पैरा (6) में उप-विधित है।

(6) निम्नलिखित की बाबत:-

(क) पूर्ववर्ती पैरा के खण्ड (ख) में वर्णित प्रत्येक लेखों की बाबत उन खण्ड और खण्ड (ग) के आधार पर किसी लेख, यदि कोई है, में जमा न किया गया अनियम और

(ख) अंतरक बैंक में प्रत्येक ऐवर की बाबत जिसी रकम को विहित तारीख से ठीक पूर्व प्रत्येक ऐवर धारक के द्वारा या उसकी ओर से ऐवर पूँजी के मध्ये नियमित रूप में मात गया या या नीचे (1) के अनुमोदन में अंतर्रिती बैंक हारा को गयी मांग के महे रकम नियम को गयी थी, मंग्रहण लेखों के रूप में माता जाएगा और उसे अंतर्रिती बैंक की बहियों में इस प्रकार वर्ज किया जाएगा और लेखों के विषद् पंद्राय निम्नलिखित रीति में किया जाएगा, अर्थात्:-

(1) (क) अंतर्रिती बैंक प्रथमत ऐसे व्यक्तिसे जो विहित तारीख का अंतरक बैंक में अस्त्वागत ऐवर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकूट था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकूट किए जाने के हफकार होता है) ऐसी तारीख या तारीखों से तीन मास के अन्दर जो विनिष्टिट की जाए या ऐसे ऐवर या ऐवरों और बकाया मानों, यदि कोई हो, को बाबत उसके हारा अन्वेषत रह रही अनाहृत रकम का नियम करने की अपेक्षा कर लकेगा और तत्पश्चात् यदि यह आवश्यक पाया जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विहित तारीख की अंतरक बैंक के साधारण ऐवर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकूट था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकूट किए जाने का हफकार होता है) ऐसी तारीख या तारीख से जो विनिष्टिट की जाए, तीन मास अन्दर ऐसे ऐवर या ऐवरों या बकाया मानों, यदि कोई हो, की बाबत उक्तके हारा अन्वेषत रह रही अनाहृत रकम का गंदाय करने की अपेक्षा कर लकेगा।

(ख) अंतरक बैंक प्रत्येक मासमें की परिस्थितियों की व्याप में रखते हुए, व्यक्तिम की कालांकित के लिए छ अंतरित व्यक्ति व्याज सहित खण्ड (क) के अधिन वेय रकम के संदर्भ की मांग और उसे प्रबतित करने के लिए मधी उपलब्ध करम उठायेगा।

(2) अंतर्रिती बैंक अधिनों, अथ या मितिकाटा किए गए दूर्गतान, द्वृष्टियों, बहरा छणों और विविध अणों तथा अस्त्र आस्तियों की बाबत जो “ऐसे अधिनों के रूप में जो आवानी से बस्तूयों याय नहीं है और या बस्तूयों के लिए दूर्बंध या बैंकास्पद” है, के रूप में बर्कित किया गया है या जो ऊपर पैरा 4 के आधार पर विहित तारीख के पश्चात् पूर्णतः या भागतः बस्तूयों योग्य है या ही सतत है के मंदेव में मासमें की परिस्थितियों की व्याप में रखते हुए, संदर्भ की मांग और उसे प्रबतित करने के किए सभी उपलब्ध कार्यकाली करेगा परन्तु यह और कि किसी कण या भास्ति की रकम 50,000 रपये से अधिक है, तो अंतर्रिती बैंक भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के लिए :

(क) यह या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता भा लहराय नहीं करेगा या किसी ऐसे वण या आस्ति की गद्दे खाते में नहीं आयेगा।

(ब) उसे अंतरित किन्हीं प्रतिमूलियों का या उसके द्वारा की गयी किसी अस्ति का विकाय या अस्थाया स्थित नहीं करेगा।

(3) इसके अन्तर्गत, अंतरिती बैंक, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45ज के साथ और अस्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पठित बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45ज के अधीन अंतरिती बैंक के किसी मप्रबन्धक, प्रबन्धक या अन्य अधिकारी के खिल्फ उच्च व्यापारिय द्वारा नुकसानों के रूप में अधिनिर्णीत की गयी रकम यदि कोई हो, की भाँग करने और उनका गंदाय फरवरी के लिए प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सभी व्यापक कार्यकालियां करेगा,

(4) अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (1)(2) और (3) में उल्लिखित भद्रों के कारण अपने द्वारा की गयी वसूलियों में से किसी भागशीत वायिक की बाबत, और रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से किसी ऐसे वायिक, जो है वह समाशित हो या अस्थायिक, की बाबत, जिसे उपर्युक्त पैरा (4) नियमनों के अनुसार निर्धारित नहीं किया गया था और जो विहित तारीख को या उसके पश्चात उद्दूक हुआ है या जिसका पता चला है, संदाय कर सकेगा या उस सम्मान के, जो पैरा 4क के अधीन उसके लिए किया गया उपबन्ध अपर्याप्त हो, उपबन्ध कर सकेगा।

(5) अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (1)(2) और (3) में उल्लिखित भद्रों के कारण अपने द्वारा की गयी वसूलियों में से, इस प्रबोजन के लिए उपगत अधीन की और भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से होने अन्य अधीनों की जो उचित समझ आए, उनमें से कटौती करने और उपर्युक्त खण्ड (4) के नियमनों के अनुसार उनमें से रकम विनियोजित भद्रों के पश्चात या ऐसे प्रतिशेष, यदि कोई हो, में से, जो ऐसे वायिकों की मोमा अंतिम रूप से अधिनियमित की जाने के पश्चात इस स्तरीय के प्रयोजनों के लिए यथा संगणित समाप्ति वायिकों की बाबत उपबन्ध में से उपलब्ध हो।

(क) निक्षेप शीमा और प्रत्यय गारंटी नियम अधिनियम, 1961 की धारा 18 की उपधारा (2) के अधीन अंतरिती बैंक द्वारा नियम से प्राप्त रकम और नियम द्वारा उपबन्धित रकम, यदि कोई हो, का संदाय करेगा, और

(ख) ऐसे निक्षेपकालियों के मामले में, जिनकी बाबत अंतरिती बैंक द्वारा कोई रकम नियम से प्राप्त की गयी है, संग्रहण खाते की बाबत शोध रकमों का, और ऐसे निक्षेपकालियों के मामले में जिनकी बाबत अंतरिती बैंक द्वारा कोई न्यकम नियम से प्राप्त की गयी है या नियम द्वारा उपबन्धित संदाय की बाबत नियम को उक्त खाते से शोध रकमों को उपर्युक्त उपबन्ध (क) के उपबन्धों के अनुसार पहले संदर्भ किए जाने के पश्चात उनके संग्रहण खाते में उस्हें शोध अनियोष्य यदि कोई हो, का संदाय करेगा।

परन्तु यह कि नियम को शोध रकम, यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो, अंतरिती बैंक की वहाँमें उपबन्धित की जाएगी तथा निक्षेप शीमा और प्रत्यय गारंटी नियम साधारण विनियम, 1961 के विनियम 21 खण्ड (ख) में विनियिट रीति से नियम को संदर्भ की जाएगी। परन्तु यह और कि अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (ख) में विनियिट संदाय उस बाण में करेगा।

(1) यदि पैरा (3) के खण्ड (ख) में उल्लिखित तत्समान या समरूप खाते को बन्द नहीं किया गया है या वह उस खाते में प्रत्यय द्वारा मुगालान के लिए परिपक्व नहीं हुआ है, और

(2) यदि उक्त खाते को बन्द कर दिया गया है या वह नफद युगान के लिए परिपक्व हो गया है।

(6) उपर्युक्त खण्ड (5) के उपबन्ध (क) के नियमनों के अनुसार नियम को शोध रकमों, और उस खण्ड के उपबन्ध (ख) के नियमनों के अनुसार निक्षेपकालियों के संग्रहण खाते में शोध रकमों की घोगा अस्पत में समान होगी और यदि उनका संदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता हो उनमें समान अनुपात में कमी होगी।

(7) इसके पैरा के खण्ड (5) में विनियिट संदाय के लिए जाने या पूर्णतः उपबन्धित किए जाने के पश्चात् अंतरिती बैंक खण्ड (5) में विनियिट रकमों के उस अनियोष्य, जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, अंतरक बैंक के यूत्पूर्व शेयर-धारकों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी रीति से और उस मामा तक, जो नीचे विनियिट है, अनुपस्थित संदाय करेगा।

(क) प्रथमतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के यूत्पूर्व अधिनियम शेयरधारकों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो,

(ख) द्वितीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के यूत्पूर्व संकाय शेयरधारकों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो और उस के पश्चात्।

(ग) तृतीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के यूत्पूर्व अस्थगित शेयरधारकों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो,

(घ) उपर्युक्त उपबन्ध (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित रकम को पूर्णतः संदर्भ करने के पश्चात् अंतरिती बैंक के पास बकी बचे अनियोष्य का अंतरक बैंक यूत्पूर्व समान शेयरधारकों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो।

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता है कि उपर्युक्त किसी उपबन्ध में उल्लिखित खाते के लिए कोई रकम शोध है या नहीं होता तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को विनियिट किया जाएगा, जिसका उस पर विनियिट अंतिम होगा।

(8) इस पैरा में विनियिट संग्रहण खाते में शोध रकम के लिए में केवल अंतरिती बैंक का दायित्व उस मामा तक समझा जाएगा जो इस स्तरीय में उपबन्धित है।

(9) विहित तारीख या ऐसी पूर्वतार अवधि से जो केवल भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् इस प्रयोजन के लिए विनियिट करे, वह वर्ष के अवसान पर, इस पैरा के खण्ड (८) में विनियिट किसी ऐसी मद का, जो उस तारीख तक बसूल नहीं, की जा सकी हो, मूल्यांकन अंतरिती बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से किया जाएगा और अंतरिती बैंक, उक्त भूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए, अवधारित कोई रकम इस पैरा के खण्ड (4) में विनियिट दायित्वों की पूर्ति के लिए अवश्यक किसी ऐसी रुशी की जो उपर्युक्त खण्ड (5), (6) और (7) में उपबन्धित रकम और रीति से उस तारीख तक छुकी जाने से रह गयी हो, पहले उनमें से कटौती करके वितरित करेगा।

(10) अंतरिती बैंक, पूर्ववर्ती खण्ड (1), (८) और (3) में उल्लिखित भद्रों के कारण वसूल किए गए ऐसे धन को, जिनकी उपर्युक्त गंदाय के लिए उसके द्वारा अपेक्षा किए जाने थी संभावना नहीं है, अपने पास या जिसी अस्थ बैंक या देशों के पास व्याज आये निक्षेपों में ऐसी रीति से और ऐसी अवधि के लिए, जो मामले के तर्जों

और परिस्थितियों को व्याप में रखते हुए उपर्युक्त ही या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निवेश दे, विनिहित करें। प्रोद्धुत व्याप को अण्ड (4), (5), (6) और (7) में निविष्ट विषयों की पूर्ति के लिए उनमें उपयोगित रूप से उपयोगित किया जाएगा।

7. किसी अभियुक्त या विवक्षित संविदा में किसी प्राप्तिकूल बात के होने हुए भी, पैरा (5) के निवन्धनों के अनुसार अंतरिती बैंक के बाब खोले गए तान खाते की बाबत व्याप का संबंध किया जाएगा और उसके क्षेत्र उन या अपने उत्तरवर्ती वित्तीयों के उपवन्धों के अनुसार ऐसी दरों पर, जो अंतरिती बैंक अनुसार थारे जाए किया जाएगा।

8. कोई भी निषेपकर्ता या अंतरक बैंक वा अन्य लेनदार, उसके प्रति अंतरक बैंक के किसी कार्यत्व की बाबत अंतरक बैंक या अंतरिती बैंक से इस स्वीम द्वारा विहित बीमा के सिकाय, कोई मांग का हकदार नहीं होगा।

9. केंद्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अंतरिती या अंतरक बैंक के खिलाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई बाद या अन्य विधिक कार्यवाहियां नहीं होंगी, जो इस स्वीम के अनुसार मेंद्रावपूर्वक को गई है या की जाने के लिए आवश्यित है।

10. अंतरक बैंक के गढ़ी कर्मचारी सेवा में बने रहेंगे और यह समझा जाएगा कि उन्हें अंतरिती बैंक द्वारा उसी परिश्रमिक और सेवा के उन्हीं नियमों और शर्तों पर नियुक्त किया गया है, जो 10 जून, 1989 को कारबार बंद होने के ठीक पहले ऐसी कर्मचारियों को लागू थी।

परन्तु यह कि अंतरक बैंक के लेनदारन्तर्गत, जिन्हें अंतरक बैंक या अंतरिती बैंक को, उस तरीख के, जिसको यह स्वीम केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठीक आगमी एक मास के अवसान के पूर्व किसी भी समय अंतरिती बैंक के कर्मचारी न होने के अपने आपय के बारे में लिखित सूचना द्वारा सूचित किया है, औद्योगिक विद्याय अधिनियम, 1947 के उपवन्धों के अधीन ऐसे प्रतिकर, यदि कोई हो, और ऐसे पेश, उपदान अधिक्षम निधि और सेवानिवृत्ति फायदे संबंध के लिये हकदार होगे, जो 10 जून, 1989 को कारबार के बंद होने के ठीक पहले अंतरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन सामान्य तौर पर मनुजेय हो।

परन्तु यह और कि अंतरक बैंक के ऐसी कर्मचारियों की बाबत जिनके बारे में यह समझा जाता है, कि उन्हें अंतरिती बैंक के कर्मचारियों के लिए नियुक्त किया गया है, अंतरिती बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने अंतरिती बैंक की सेवा में रहने के दीर्घ उपकी छठ्ठी भी दशा में इस आधार पर छठ्ठी प्रतिकर के संदर्भ का दायित्व लिया है कि उनकी सेवा निरन्तर बनी रही है और अंतरिती बैंक में उनके स्वानुस्तरण से विच्छिन्न नहीं है।

11. अंतरिती बैंक, उस तारीख से जिसको इस स्वीम को मंजूर किया जाना है, नीन वर्ष से अनाधिक अवधि के अवसान पर, अंतरक बैंक के कर्मचारियों को वही पारिश्रमिक और सेवा के बाही नियंत्रण और शर्तों संबंध या मंजूर करेगा, जो अंतरिती बैंक के तत्त्वान रेक या प्राप्तिय के कर्मचारियों को, अंतरिती बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों के समान या समतुल्य अंतरक बैंक के उक्त कर्मचारियों के पास अद्वैत, और अनुभव के अधीन रहते हुए, लागू हों।

परन्तु यह कि यदि कोई शंका या मतदेव उत्पन्न होता है कि कर्मचारियों में से किसी भी महसूस या अनुभव अंतरिती बैंक के क्षेत्रमान रेक या प्राप्तिय के अन्य कर्मचारियों की भ्रह्मतां और

अनुभव के समान या समतुल्य है या नहीं या वह अंतरिती बैंक के बेतनमान में कर्मचारियों का बेतन नियत करने के लिए अपनाए जाने वाले सिद्धान्तों की प्रक्रिया के संबंध में है, तो शंका या मतदेव का भारतीय रिजर्व बैंक को निविष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनियोग अन्तिम होगा।

12. यथास्थिति, अंतरक बैंक या अंतरिती बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी अधिक्षम निधि और/या उपदान निधि के न्यासी या प्रशासक, विहित तरीख को या उसके पश्चात् यथासंभव प्राप्ति, अंतरिती बैंक के लिए गठित कर्मचारी अधिक्षम निधि और/या उपदान निधि के न्यासी को, या प्रस्तुता, जैसा अंतरिती बैंक निदेश दे, अंतरक बैंक के कर्मचारियों के फायदे के लिए न्यास में आर्थित सब धन और विनियोग अंतरित कर देंगे।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चात् अंतरिती न्यासी, विनियोगों के मूल्य में किसी कर्मी के लिए, या विहित तरीख या पहले किए गए कार्य, उपेक्षा, या अधिक्रम की बाबत क्याँ नहीं होंगे।

13. अंतरिती बैंक, ऐसे विवरण और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक को देंगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्वीम के कार्यान्वयन नारंते के संबंध में समय-समय पर अपेक्षा करे।

14. अंतरिती बैंक, अंतरक बैंक के कार्यकलाप का विवरण, ऐसे प्राप्ति में और ऐसे वालिक अंतरालों पर, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्वीम के लिए गठित करे, अंतरक बैंक के गोपनीयां को देंगा। ऐसे विवरणों का भेजा जाना तत्त्व रोका जाएगा जब रिजर्व बैंक ऐसा निवेश दे।

15. किसी ऐसी सूचना या अन्य संसूचना के बारे में, जिसकी अंतरिती बैंक द्वारा दी जाने की श्रूति को जाती है, उस दशा में यह समझा जाएगा कि उसे सम्पक रूप से दे दिया गया है, यदि अंतरक बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकूट पते पर, जब तक कि कोई नया पता अंतरिती बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकूट न हो, प्रेदिती को सम्बोधित किया गया है और उसे पूर्व-संदेश तामन्य डॉक से भेज दिया गया है और ऐसी सूचना उसे डाक में दाख जाने के पश्चात्/प्राइवेलीस घटे के अवसान पर तारीख की गयी समझी जाएगी। इसके अतिरिक्त, किसी ऐसी सूचना या संसूचना को, जो भारतीय हिस्से की हो, एक या अधिक दैनिक समाचार पत्रों में, जिनका परिचालन ऐसे स्थानों पर हो जाहां बैंक अपने कारबार का संबद्धाहार कर रहा था, विज्ञापित किया जाएगा।

16. यदि इस स्वीम के किसी उपवन्ध के निवंशन वार्ते समय कोई शंका उत्पन्न होती है तो मामले को भारतीय रिजर्व बैंक को निविष्ट किया जाएगा और उसकी गोपनीयता अपेक्षा होगी और अंतरिती बैंक और अंतरक बैंक दोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभी संस्थाओं, निषेपकर्ताओं और अन्य संसदीय संघों पर भी और किसी ऐसे अन्य अधिकर या दायित्व है, आवादकर होगी।

17. यदि इस स्वीम के उपवन्धों की प्रभावी करने में कोई अडिनाई उत्पन्न होती है तो केन्द्रीय सरकार, अंतरक और अंतरिती बैंकों को या उनमें से किसी को, ऐसे लिंग, जो इस स्वीम से अनुगत न हो, आरो कर सके, जो केन्द्रीय सरकार को भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् अडिनाई हूर करने के प्रयोजन के लिए अवश्यक या उपयुक्त प्रतीत हो।

S.O. 879(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the United Industrial Bank Ltd., Calcutta, under sub-section (2) of the said section;

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the United Industrial Bank Ltd., Calcutta, with the Allahabad Bank;

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

(1) The United Industrial Bank Ltd., Calcutta, shall be the transferor bank and the Allahabad Bank shall be the transferee bank.

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of Section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers stocks of stationary, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with banks, bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the manner provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending, the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive

officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 10th June, 1989 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets of profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of Section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by Section 285 of that Act.

(4) (i) The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely,

(a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.

(b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of Section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.

(ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.

(iii) Where the market value of any Government security such as The Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

(c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.

- (d) Where the market value or any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.
- (e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.
- (g) Advances including bills purchased and discounted book debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefore examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful or recovery".

(II) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

(III) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely,

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any accrued thereon upto the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

Explanation.—For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this

scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payment, or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 10th June, 1989 issued to the transferor bank :

Provided that any payment made from a deposit account on or after the close of business on 10th June, 1989 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment :

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

Explanation.—The term 'pro rata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 10th June, 1989 together with the interest payable upto the date immediately preceding the prescribed date and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall with the least possible delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of Section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of Section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of Section 18 of that Act.

Provided that—

(i) If any account referred to in clause (b) above has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash ;

(ii) In case the person entitled to any amount referred to in clause (b) above cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.

(d) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the

transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below:

(6) In respect of—

(A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and

(B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below,

shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely :—

(i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any :

(b) the transferee bank shall take all the available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default.

(ii) the transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and Sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India.

(a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debtor asset;

(b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.

(iii) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under Section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with Section 45H thereof and also with Section 543 of the Companies Act, 1956;

(iv) the transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5)(a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date;

(v) the transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i).

(ii) and (iii) above, after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained :

(a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of Section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and

(b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above.

(i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and

(ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash ;

(vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (i) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;

(vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below :

(a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made ;

(b) in the second place, the amounts, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made ; and thereafter

(c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made ;

(d) after all the amounts mentioned in sub-clause (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(viii) the amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;

(ix) on the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.

(x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.

(7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs and at such rates as the transferee bank may allow.

(8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

(9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.

(10) All the employees of the transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 10th June, 1989 :

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provided fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 10th June, 1989

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(12) The trustees or administrators of any provident fund and/or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and/or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank :

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(13) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

(14) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

(15) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.

(16) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks

(17) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India, to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[No. 17/2/89-B.O. III(ii)]

का.आ।. ४४०(प्र)---वैकल्पिक वित्तीयमंत्र अधिनियम, १९४९ (१९४९ का १०) पर्याय ५५ की उप-धारा (२) द्वारा, प्रदत्त शक्तियों द्वारा प्रयोग करते हुए और भारत सरकार वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग की दिनांक १० जून, १९८९ की अधिसूचना गंडवा का.आ।. ४३४(अ) के द्वारा विधायिक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग की दिनांक ६ अक्टूबर, १९८९ की अधिसूचना संस्था का.आ।. ७५३(अ) में संशोधन करते हुए, केन्द्रीय सरकार, एतद्वारा, निर्देश दिया है कि यूनाइटेड इंडस्ट्रियल बैंक लि., कर्मकाला के संबंध

में उम्मेद द्वारा प्राप्ति किया गया अधिसूचना दिनांक ५ अक्टूबर, १९८९ तक और उसके अद्वितीय लाभ रहेगा।

[मंज्ञा १७/२/८९-वा ओ. -III(iii)]

मन्त्रेश्वर ज्ञा, नयुन गांधी

S.O. 880(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), and in modification of the Notification of the Government of India in the Ministry of Finance, Department of Economic Affairs No. S.O. 434(E) dated the 10th June, 1989, as modified by the Notification of the Government of India in the Ministry of Finance, Department of Economic Affairs No. S.O. 793(E) dated the 6th October, 1989, the Central Government, hereby directs that the order of moratorium made by it in respect of the United Industrial Bank Limited, Calcutta, shall remain in force upto and inclusive of the 30th October, 1989.

[No. 17/2/89-B.O. II(iii)]
MANTRESHWAR JHA, Jt. Secy.

